Date - 10/08/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. - II (Hons.)

Topic - Pramanyavada : Mimamsa Philosophy

Scanned with CamScanner

प्रामाण्यवाद

ज्ञान के स्वरूप के विश्लेषण के क्रम में दो मुख्य प्रश्न भारतीय दार्शनिकों के समक्ष उत्पन्न होते हैं।

(1) ज्ञान का ज्ञान कैसे होता है?

(2) ज्ञान की सत्यता और प्रामाणिकता का पता कैसे चलता है?

भारतीय दर्शन में इस उपरोक्त समस्या का विवेचन 'प्रामाण्यवाद' के सन्दर्भ में किया जाता है। प्रामाण्यवाद के दो पक्ष हैं।

(i) प्रमाण के प्रामाण्य का ज्ञान कैसे होता है अर्थात् जिस प्रमाण से प्रमेय का ज्ञान होता है उस प्रमाण के सत्यत्व की कसौटी क्या है?

(ii) अप्रमाण के अप्रामाण्य का पता कैसे चलता है?

जो दार्शनिक यह समझते हैं कि प्रमाण में ही प्रामाण्य रहता है वे स्वतः प्रामाण्यवादी हैं। जिनके मत में प्रमाण के प्रामाण्य के लिए किसी बाहरी तत्व की अपेक्षा रहती है वे परतः प्रामाण्यवादी कहलाते हैं। ऐसा ही वर्गीकरण अप्रामाण्य के सन्दर्भ में भी है। इस प्रकार प्रामाण्यवाद के अन्तर्गत कुल चार पक्ष बनते हैं।

(1) स्वतः प्रामाण्यवाद
(2) स्वतः अप्रामाण्यवाद
(3) परतः प्रामाण्यवाद
(4) परतः अप्रामाण्यवाद

Scanned with CamScanner

भारतीय दर्शन में प्रामाण्यवाद सम्बन्धी मत:

नैयायिक ज्ञान के प्रामाण्य और अप्रमाण्य दोनों को परत: मानते हैं। वहीं सांख्य नैयायिकों के ठीक विपरीत प्रामाण्य और अप्रामाण्य दोनों को स्वत: जानते हैं। बौद्ध प्रामाण्य को परत: और अप्रामाण्य को स्वत: जानते हैं वहीं मीमांसक प्रामाण्य को स्वत: और अप्रमाण्य को परत: जानते हैं।

Scanned with CamScanner